

18th January 2015

ఆంధ్ర

Annual Subscription fee 100/-

आर्य अर्य जीवन्



जीवन

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प
हैमोन्दी-तेलुगु द्विभाषी पक्ष पत्रिक

KAKA IS NO MORE NOW

VETERAN CONGRESS LEADER HAVING ARYA SAMAJI BACK GROUND
A YOUNG CRUSSLADER AGAINST THE THEN RAZAKARS SRI G. VENKAT SWAMI
(KAKA) PASSED AWAY ON 22nd DECEMBER 2014

కాకా అస్తమయం

आर्य समाज से अपने सामाजिक-राजनीतिक जीवन का
कार्य

थशुरू करने वाले श्री जी. वेंकटस्वामीजी अब नहीं रहे।

కాకా ప్రస్థానం

పేరు: గడ్డం వెంకటస్వామి (కాకా)
విద్యాభ్యాసం: లాల్ దర్వాజ ఆర్యసమాజ్ స్కూలు, హైదరాబాద్ చాదర్‌పూట్ స్కూలు, మొగల్‌పూర్ స్కూలులో విద్యాభ్యాసం.
వివాహం: 1944లో కళావతితో వివాహం.
తొలి పదవి: 1946, 47లో 15 సం.ల చిరు ప్రాయంలోని యూత్ కాంగ్రెస్ జనరల్ సెక్రటరీ పదవి చేపట్టారు. 1982లో ఆంధ్రప్రదేశ్ కాంగ్రెస్ కమిటీ అధ్యక్షులుగా నియామకం.
ఎన్నిక: 1957లో ఆంధ్రప్రదేశ్‌లోని తెన్నూరు, సిర్పూరు నియోజక వర్గం నుంచి ఎమ్మెల్యేగా మొదటిసారిగా ఎంపికయ్యారు ఆ తర్వాత పార్లమెంట్ సభ్యుడిగా ఏకదాటిగా 7 పర్యాయాలు ఎన్నికయ్యారు.
మంత్రి పదవులు: ఇందిరాగాంధీ మంత్రివర్గంలో కేంద్ర కార్మిక శాఖ మంత్రిగా 1972 నుంచి 77 వరకు కొనసాగారు. 1978 నుంచి 82 వరకు ఆంధ్రప్రదేశ్ ప్రభుత్వంలో లేబర్ అండ్ సివిల్ సప్లయ్స్ మంత్రిగా వ్యవహరించారు. 1991-98లో పివి నరసింహారావు ప్రధాని హయాంలో కేంద్ర గ్రామీణాభివృద్ధి శాఖకు స్టేట్ మినిస్టర్‌గా పనిచేశారు. 1993లో కేంద్ర టెక్నోలజీ మినిస్టర్‌గా బాధ్యతలు చేపట్టారు.
పథకాలు: 1991లో చారిత్రాత్మక పంచాయతీ రాజ్ బిల్లు ప్రవేశపెట్టారు. 1993-94లో సింగరేణి నష్టాల్లో కూరుకుపోయి బీజఎఫ్‌ఆర్ కోరల్లో చిక్కుకోగా సంస్థకు 400 కోట్ల రూపాయల వడ్డీని మాఫీ చేయించి ఎస్పీసీ నుంచి 100 కోట్ల సొమ్ము అడ్వాన్స్‌గా ఇప్పించి సంస్థ గాడిలో పడటానికి కృషి చేశారు. 1995లో కేంద్ర కార్మిక శాఖ మంత్రిగా ఉండగా పదవీ విరమణ అనంతరం కార్మికులకు పెన్షన్ ప్రవేశపెట్టే విధానాన్ని తీసుకవచ్చి 85 లక్షల మంది కార్మికులకు పెన్షన్ ఇప్పించారు. 1973లో హైదరాబాద్‌లో బీఆర్ అంబేద్కర్ కళాశాలను ప్రారంభించారు.

TRIBUTE TO KAKA

- ARYA PRATINIDHI SABHA
HYDERABAD

గడ్డం వెంకటస్వామి

గల్లీ నుంచి ఢిల్లీ దాక..
గరీబుల అండగా..

అనితర సాధ్యం కాకా మార్గం

Abstract:



Abstract:

Abstract:

Abstract:

Abstract:

Abstract:

Abstract:

Abstract:

Abstract:

1990

Abstract:

1990

वर्ष २००८ में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमति प्रतिभा देवीसिंह पाटीलजी के साथ श्री जी. वेंकटस्वामी तथा स्वामी अग्निवेश व सभा प्रधान विट्ठलरावजी आर्य ।



निचले चित्रों में संत श्रीश्री रविशंकरजी के साथ श्री वेंकटस्वामीजी स्वामी, स्वामी अग्निवेशजी व अन्य लोग देखे जा सकते हैं।



‘एक दलित बन्धु की बारात में एक सुप्रसिद्ध आर्य संन्यासी’

मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

महाभारत काल तक हमारे देश में गुण-कर्म-स्वभाव पर आधारित वर्ण (selection) व्यवस्था थी। महाभारत काल के बाद मध्यकाल के दिनों व उससे कुछ समय पूर्व इस व्यवस्था ने जन्म पर आधारित जाति व्यवस्था का रूप ले लिया। इस व्यवस्था में ही मनुष्य-मनुष्य के बीच छुआछूत आदि का प्रचलन भी हुआ। महर्षि दयानन्द ने नयी जाति या वर्ण व्यवस्था को मरण व्यवस्था नाम दिया और इसे समाप्त करने का प्रयास किया। उन्हें इसमें आंशिक सफलता भी मिली है। परन्तु आज भी यह हानिकारक जन्म पर आधारित जाति व्यवस्था समाप्त नहीं हुई है। अब से 50 – 100 वर्ष पूर्व यह बहुत अधिक विकराल रूप में देश में भी। आर्य समाज ने इसके उन्मूलन में सराहनीय कार्य किया है। इस लेख में हम एक आर्य समाज के अनुयायी दलित बन्धु के विवाह की प्रेरणाप्रद घटना प्रस्तुत कर रहे हैं जिसका अपना विशेष महत्व है।

आर्य जगत के वयोवृद्ध व ज्ञानवृद्ध विद्वान प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु सन् 1975 में अहमदाबाद गये। इस अवसर पर वहां उन्होंने साबरमती आश्रम देखा। इस आश्रम में गांधी जी ने अपने हाथों से सूत कात कर अपने सबसे पहले हरिजन साथी को एक कुर्ता सिलवा कर दिया था। यह कुर्ता साबरमती आश्रम में गांधी जी के प्रयोग में आई वस्तुओं के साथ में रखा हुआ है। जिज्ञासु जी ने जब इस कुर्ते को देखा तो उन्हें यह बहुत अच्छा लगा। उनके मन में विचार आया कि आर्य जगत के ज्ञानी, त्यागी, तपस्वी व देश-धर्म-संस्कृति भक्त स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने दलितोद्धार के लिए प्रशंसनीय कार्य किया था। उनके प्रथम दलित शिष्य भक्त का पता लगाना चाहिये। वह उसकी खोज में निकल पड़े। पंजाब में रामा मण्डी गये। वहां महाशय निहालचन्द जी से इस बारे में प्रश्न किया। उन्होंने बताया कि जिस श्री किशन सिंह के विवाह की घटना उन्होंने “प्रेरणा कलश” में दी थी, वही स्वामी जी का पहला दलित शिष्य था।

श्री निहाल सिंह और प्रा. जिज्ञासु जी की बातचीत में यह तथ्य सम्मुख आये कि श्री निहाल सिंह, श्री अजीत सिंह ‘किरती’ तथा श्री किशन सिंह सहोदर भाई न होकर एक गुरु के शिष्य होने के कारण परस्पर भाई थे। श्री किरती एक जाट परिवार में जन्में थे और श्री किशन सिंह एक दलित परिवार में। किशन सिंह जी का विवाह निश्चित हो गया था। सब आर्य युवकों की एक बैठक हुई। बैठक में विचार हुआ कि विवाह संस्कार व बारात आदि की ऐसी व्यवस्था हो कि कन्या पक्ष के गांव में आर्य समाज की अच्छी धाक व छाप पड़े। इसके लिए एकमत से निर्णय हुआ कि स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी को बारात में ले जाया जाये। स्वामी जी के बारात में जाने से वैदिक धर्म के विचार व सिद्धान्त वधू पक्ष के गांव में पहुंच जायेंगे। बैठक के लोगों ने अजीत किरती जी को स्वामीजी को बारात में चलने के लिए राजी करने का काम सौंपा। किरती जी ने स्वामीजी को जब बारात में चलने के लिए कहा तो स्वामीजी ने समझाया कि साधू संन्यासियों को बारात में ले जाना अच्छा नहीं लगता। मैं बारात में नहीं चलूंगा। जिन दिनों की यह घटना है, उन दिनों इस प्रकार की बैठक का होना तथा इस प्रकार का कार्यक्रम बनाना एक बहुत बड़ी कान्ति थी। एक दलित भाई के विवाह में जाट, बनिये, ब्राह्मण, खत्री आदि मिलकर बारात की रूप रेखा तय कर रहे थे। यह भी अनोखा ही कार्य था कि एक दलित बन्धु के विवाह में सभी बिरादरियों के युवक प्रसन्नता व उत्साह पूर्वक भाग लें। ऐसा इससे

पूर्व कभी देखा नहीं गया था। किरती जी ने जब बैठक को सूचित किया कि स्वामी जी बरात में जाने के लिए सहमत नहीं हैं तो सबने एकस्वर से उन्हें कहा कि स्वामीजी को बता दें कि यदि वह बरात में नहीं जायेंगे तो श्री किशन सिंह का विवाह नहीं होगा। किरती जी ने जब स्वामी जी को यह सूचना दी तो स्वामी जी विचार करने लगे कि यदि शादी न हुई तो कन्या को सारे जीवन में घर में बैठना होगा। कौन उससे विवाह करेगा? **कन्या के भावी जीवन की कल्पना कर स्वामीजी चिन्तित हो गये।** उन्होंने किरतीजी को कहा कि **“अच्छा! मैं बरात में तो चलूंगा परन्तु वहां केवल पांच मिण्ट ही रहूंगा, इससे अधिक देर नहीं रुकूंगा।”** रामा मण्डी के युवक मण्डल ने स्वामीजी की बात मान ली। उन दिनों में रामामण्डी में ऊंट ही यातायात का साधन था। बरात का दिन आ गया। स्वामी जी के लिए बारात के दिन एक ऊंट को सजाया गया। कन्या पक्ष को स्वामी जी के बरात में आने की सूचना दी जा चुकी थी जिसे सुन कर वहां के लोग अत्यन्त खुश थे। देश-विदेश में विख्यात वेदों के एक विद्वान संन्यासी का बरात में जाना कोई साधारण बात नहीं थी। बरात के दिन स्वामीजी ने ऊंट पर बैठना तो स्वीकार नहीं किया। वह पैदल ही कन्या पक्ष के गृह स्थान की ओर चल पड़े। उनके सम्मान में अन्य सभी बराती भी ऊंटों को साथ लेकर पैदल ही कन्या पक्ष के घर पर जा पहुंचें।

इतिहास की अपने प्रकार की यह एक निराली घटना थी जिसमें एक प्रसिद्ध, तेजस्वी, प्रतापी, बाल ब्रह्मचारी संन्यासी सम्मिलित हुआ। शिष्यों ने गुरु को मनाया और गुरु ने शिष्यों का प्रेम व श्रद्धा से सिकत आग्रह स्वीकार किया। इस बारात के स्वागत के लिए कन्या पक्ष का सारा ग्राम उमड़ पड़ा था। वहां स्वामी जी को एक बड़े पंलग पर बैठाया गया। स्वामीजी पैर नीचे लटकाकर पलंग पर बैठ गये। आपने दोनों पक्षों के लोगों को 5 मिन्ट तक गृहस्थ जीवन के कर्तव्यों पर सारगर्भित उपदेश दिया और इसके बाद वापिस अपने स्थान पर लौट आये। स्वामीजी ने उपदेश के अन्त में जो शब्द कहे वह थे – **“यही धर्म है। यही मर्यादा है। यही सनातन वैदिक रीति है। अब तुम्हारी बिरादरी के मनोरंजन की वेला है।”** आर्य जगत के शीर्ष विद्वान प्रा. जिज्ञासु जी ने अपनी स्मृतियों की यात्रा पुस्तक में इस घटना को देकर लिखा है कि इस घटना की खोज पर उन्हें बड़ा गौरव है। श्री महाशय निहालचन्द जी व अन्य कर्मचारों से जुड़ा यह संस्मरण उनके लिए अविस्मरणीय है। वे लोग कान्ति करते हुए ‘प्रेम माला में सबको पिरोते गये।’ आगे उन्होंने लिखा है कि आरक्षण के बीच में आरक्षण देश को डुबो के न रख दे। युवको! चेतों! यह घटना आज भी प्रासंगिक है। इतने वर्षों बाद भी समाज में उन्नति की जगह अवनति ही देखने को मिल रही है। इसके अनेक कारण हैं जिन पर विचार कर उनका निराकरण करना है अन्यथा यह देश के लिए घातक हो सकता है। हम इस घटना को प्रकाश में लाने के लिए प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी का आभार व्यक्त करते हैं। आर्य समाज ने दलितोद्धार का कार्य सन् 1875 में सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन से ही आरम्भ कर दिया था।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के दलितोद्धार पर प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु रचित कुछ पंक्तियों को प्रस्तुत कर लेख को विराम देंगे। जिज्ञासु जी ने लिखा है—**“करुणा-सिन्धु दयानन्द के शिष्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज को भी छूतछात, जाति-भेद व ऊंच-नीच के भद्दे भाव बहुत अखरते थे। इन बुराइयों के विरुद्ध वे जी-जान से लड़े। वैदिक धर्म किसी वर्ग-विशेष के लिए नहीं है। प्रभु की पवित्र वेदवाणी मानवमात्र के लिए है। अस्पृश्यता-निवारण के लिए आपने पंजाब, हरियाणा, हिमाचल व जम्मू-कश्मीर में बड़ा संघर्ष किया। जम्मू में जान जोखिम में डालकर दलित भाइयों की सेवा की। किसी भी राजनैतिक दल ने दलितों के लिए कभी भी कोई बलिदान नहीं दिया। आर्यवीर रामचन्द्र जी ने जम्मू में दलितोद्धार के लिए महा-बलिदान दिया। उस वीर के बलिदान के समय आर्यों पर बड़े अत्याचार किए गए। तब जान जोखिम में डालकर आजन्म ब्रह्मचारी स्वामी स्वतन्त्रानन्द सीना तानकर जम्मू राज्य में**

कए। महात्मा हरिराम जी व श्री अनन्तराम सरीखे आर्यों को साथ लेकर पूज्य स्वामी जी ने पोंगापंथियों पर विजय पाई। दलितों की रक्षा व उत्थान के लिए जो कार्य स्वामी जी ने किया, उसको शब्दों में बता पाना कठिन है। दलितोद्धार के लिए श्री महाराज एक बात कहा करते थे कि यदि इनको आर्थिक उद्धार हो जाए तो अन्य बुराइयां दूर करना इतना कठिन नहीं। जब दीनबंधु महात्मा फूलसिंह ने नारनौद में दलितों के लिए कुएं खुलवाने के लिए ऐतिहासिक मरणव्रत रखा, तो सारे देश का ध्यान आर्य नेता महात्मा फूलसिंह की सतत ससाधना पर केन्द्रित हो गया। गांधी जी भी भक्त फूलसिंह जी के महाव्रत से बड़े प्रभावित हुए थे। तब हमारे पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने हरियाणा के गांव-गांव में घूमकर वातावरण को अनुकूल बनाया, जनजागृति पैदा की और चौधरी छोटूराम का भी सहयोग प्राप्त किया। वोट-नोट की राजनीति करने वाले भला वीर रामचन्द्र व भक्त फूल सिंह के बलिदान की चर्चा क्यों करें? स्वामी स्वतन्त्रता ने दलितोद्धार के जो कार्य किए यह तो उनका संकेत मात्र है।”

हमारे इन स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी का जन्म लुधियाना जिले के मोही ग्राम के एक प्रतिष्ठित सिख जाट परिवार में जनवरी, 1877 में हुआ था। आप कुछ समय तक अद्वैतवाद की विचारधारा से प्रभावित रहे और बाद में आर्य समाज के अनुयायी बने। आप सन् 1939 में हैदराबाद में चलाये गये आर्य सत्याग्रह के फील्ड मार्शल बनाये गये थे। आपका शौर्य और सूझबूझ ने हैदराबाद के निजाम को झुका कर उससे हिन्दुओं के धार्मिक कृत्यों पर प्रतिबन्ध को समाप्त करने की अपनी मांगे मनवाई थी। 29 मार्च सन् 1941 को मुस्लिम रियासत लोहारू में आर्य समाज के उत्सव की शोभा यात्रा में विधर्मियों ने 65 वर्षीय इस संन्यासी के शिर पर कुल्हाड़े व लाठियों आदि का प्रहार कर घायल कर दिया था। शिर से रक्त बह रहा था। इसी अवस्था में आप लोहारू से रेल द्वारा दिल्ली पहुंचे जहां इरविन अस्पताल में आपने उपचार कराया। आपके शिर में अनेक टांके लगे। आपने बिना क्लोरोफार्म सुंधे ही टांके लगवाकर अपने ब्रह्मचर्य एवं योग बल का परिचय देकर सभी डाक्टरों को आश्चर्य में डाल दिया था। महर्षि दयानन्द से प्रेरणा आपने और महर्षि दयानन्द के सभी सैनिक अनुयायियों ने दलितोद्धार का अविस्मरणीय ऐतिहासिक कार्य किया है। इन्हीं शब्दों के साथ हम लेख को विराम देते हैं।

—मनमोहन कुमार आर्य

आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से श्री राजसिंहजी को विनम्र श्रद्धांजलि।

युवा वैदिक विद्वान्, आर्यजगत् के विख्यात कर्मठ

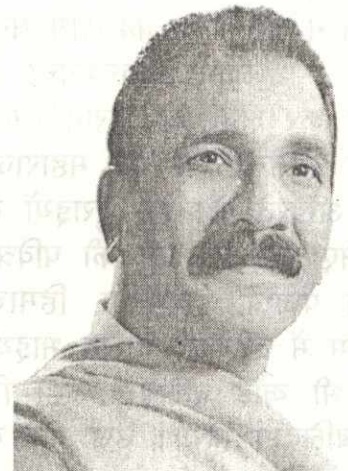
आर्यनेता, प्रेरक

ब्र. राजसिंह आर्य जी का आकस्मिक निधन

देश-विदेश से शोक-संवेदनाएं : सम्पूर्ण आर्य जगत्

में शोक की लहर

नेत्रदान का संकल्प पूर्णकर दो आँखों को दी नई दुनिया



‘गुरुकुल शिक्षा का उद्देश्य वेद प्रचारक वैदिक विद्वान बनाना है’

सषष्टि के आरम्भ से जो गुरुकुल वा विद्यालयीय शिक्षा आरम्भ हुई और महाभारत काल व उसके अनेक वर्षों बाद तक सफलतापूर्वक चली, वह निश्चित ही गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली थी। आजकल की विद्यालयीय शिक्षा में विद्यार्थी अपने परिवार और विद्यालय के बीच में फंसा रहता है। उसकी सर्वांगीण शारीरिक व आत्मिक उन्नति नहीं हो पाती। उसका मन व ध्यान अपनी शिक्षा के साथ घर व समाज की समस्याओं में उलझा रहता है जो कि उसके आध्यात्मिक व इतर विषयों के ज्ञान की प्राप्ति में जटिलतायें उत्पन्न करता है। सषष्टि के आदि में अमैथुनी सषष्टि में उत्पन्न सभी मानवों के जीवन निर्वाह के लिए चार वेदों ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद का ज्ञान चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा को सषष्टिकर्त्ता-नियन्ता ईश्वर से प्राप्त हुआ। यह अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा चार मनुष्यों वा ऋषियों के नाम हैं न कि आग, हवा, सूर्य और अग्नि आदि पदार्थों या उनके किसी अवयव के। यह वेद सभी सत्य विद्याओं की पुस्तकें हैं। यह वेद ईश्वर प्रदत्त इस कल्प का पहला व आखिरी ज्ञान है। इसके बाद ईश्वर ने किसी को वेद से भिन्न कोई ज्ञान नहीं दिया। यदि कोई मानता है तो यह उनका अज्ञान, अविद्या व स्वार्थ है। वेदों के अध्ययन से मनुष्य सभी आध्यात्मिक एवं लौकिक विद्याओं को जानने में समर्थ होता है। कुछ शेष बचता ही नहीं है। सषष्टि के आदि से महाभारत काल तक की अवधि 19,60,848 हजार वर्ष होती है। महाभारत काल के बाद शिक्षा की समुचित व्यवस्था न होने के कारण वैदिक मत अनेक प्रकार की विकर्षितियों को प्राप्त हुआ। विगत लगभग 5,115 वर्षों में समय-समय पर मूर्तिपूजा, अवतारवाद, फलित ज्योतिष, यज्ञों में पशु हिंसा, मांसाहार, जन्मना जातिवाद, छुआछूत, स्त्री-शूद्रों के वेद एवं अन्य विषयों के अध्ययन पर प्रतिबन्ध, सतीप्रथा, बाल विधवाओं सहित सभी विधवाओं के पुनर्विवाह पर प्रतिबन्ध, गुरुडम आदि अवैदिक परम्पराओं एवं अनेक मत-मतान्तरों का प्रचलन हुआ। शिक्षा की गुरुकुलीय व्यवस्था धीरे-धीरे समाप्त हो गई। उसके स्थान पर कुछ पठित ब्राह्मणों द्वारा आजीविका के लिए ब्राह्मण बच्चों सहित कुछ क्षत्रिय तथा वैश्यों के बच्चों को वेदेतर ग्रन्थों का अध्ययन कराया जाता था। इस अध्ययन में मुख्यतः संस्कृत भाषा का ज्ञान कराना ही लक्ष्य था। ब्राह्मणेतर विद्यार्थियों को धर्म शास्त्र का अध्ययन करने की सुविधा नहीं थी। क्षत्रिय व वैश्य परम्परा से अपने पारिवारिक जनो से शास्त्र विद्या, कर्षि कार्य, व्यापार आदि का कार्य सीखते रहे और ब्राह्मण लोग अपने पठित अग्रजों से संस्कृत व पुराणों आदि का अध्ययन कर अवैदिक पौराणिक विद्वान बनने लगे।

उन्नसवीं शताब्दी में वेदों के अपूर्व विद्वान महर्षि दयानन्द सरस्वती (1825-1883) का प्रादुर्भाव होता है। वह देखते हैं कि भारत सहित संसार में सर्वत्र अविद्या, अशिक्षा, अज्ञान, अन्ध विश्वास व पाखण्डों आदि का बोलबाला है। यह सब बातें इस शाश्वत् नियम कि अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये, को भूलने और उसका समाज में व्यवहार न होने के कारण हुई थी। महर्षि दयानन्द देशवासियों का वेद और वेद विद्या की ओर लौटो का नारा देते हैं। वेद विद्या के पुनरुद्धार और अज्ञान व अन्ध विश्वासों को नष्ट करने के लिए वह संस्कृत पाठशालायें व गुरुकुल खोलने की प्रेरणा करते हैं। वह स्वयं भी कई संस्कृत पाठशालायें खोलते हैं जो उस अवैदिक वातावरण में योजना के उद्देश्य व महत्व को न समझने के कारण सफल नहीं हो सकीं। सन् 1883 में उनकी मृत्यु के बाद उनके प्रमुख शिष्य महात्मा मुंशीराम जो बाद स्वामी श्रद्धानन्द के

नाम से प्रसिद्ध हुए, मार्च 1902 में हरिद्वार के कांगड़ी ग्राम में एक गुरुकुल खोलते हैं। जहां वेदों एवं वैदिक शास्त्रों के अनेक प्रख्यात विद्वान तैयार होते हैं और उससे विश्व में वेद विद्या और योग आदि का प्रचार होता है।

महर्षि दयानन्द की प्रेरणा से आर्य समाज व स्वामी श्रद्धानन्द जी का गुरुकुल खोलने के पीछे क्या कारण था? वह कारण था देश व समाज से अविद्या व अज्ञान को मिटाना। अज्ञान मिटेगा तो ज्ञान का प्रकाश होगा। हर व्यक्ति की योग्यता का विकास होगा और वह देश व समाज के निर्माण में अपनी भूमिका निभायेगा। ज्ञानी होने से रोजगार तो उसे स्वतः मिलेगा। ज्ञानी व्यक्ति अकर्मण्य नहीं होता और शिक्षित व कर्मण्य व्यक्ति के पीछे रोजगार स्वतः ही आयेंगे, विचार व चिन्तन करने पर यह तर्क संगत उत्तर मिलता है बशर्ते कि समाज में अविद्या, पक्षपात, हठ, दुराग्रह आदि दुर्गुण न हो। इन दुर्गुणों का निराकरण भी ज्ञान के प्रचार व प्रसार तथा व्यवस्था की खामियों को दूर करने से होगा जिसे गुरुकुलों के आचार्यों के स्नातक विद्वान ब्रह्मचारी ही कर सकते हैं। हमारा यह भी मानना है कि गुरुकुल के संस्कृत व्याकरण सहित वेद व वैदिक साहित्य पढ़े हुए स्नातक अच्छे शिक्षक बन सकते हैं तथा यथार्थ धर्माचार्य, पुरोहित व पत्रकार आदि भी। शिक्षक समाज में सबसे अधिक सम्मानित व वरेण्य होता है। वह दूसरे अज्ञानियों को शिक्षित करेंगे तो उन आचार्यों के शिष्यों द्वारा उनकी श्रद्धापूर्वक सेवा तो की ही जायेगी। जो स्नातक ब्रह्मचारी किसी कारण पूर्णकालिक वेद सेवा व शिक्षा आदि का कार्य न कर सरकारी नौकरी आदि करना चाहें तो वह अध्ययन समाप्ति के बाद कुछ समय तक लौकिक ज्ञान का अध्ययन कर अपेक्षित नौकरी प्राप्त कर लें परन्तु आचार्य ऋण से उन्मुक्त होने के लिए उन्हें भी वेदोपदेशक व शिक्षक आदि बनना ही चाहिये अन्यथा वह अपने गुरु के प्रयासों, शिक्षण, तप व पुरुषार्थ के अनुरूप कार्य न करने के दोषी होंगे।

जब हम शिक्षा और रोजगार विषय पर विचार करते हैं तो पाते हैं कि हमारे बड़े-बड़े विद्वानों ने अच्छी नौकरियां मिलने पर भी उनका त्याग कर दिया था। इस श्रृंखला में हम महात्मा मुंशीराम जो सन्यास लेकर स्वामी श्रद्धानन्द बनें, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराज (डी.ए.वी. स्कूल के संस्थापकों में प्रमुख), पं. लेखराम व ऐसे अनेक नाम हैं। हमारे यहां ऐसे भी अनेक लोग हो गये हैं जो बहुत अधिक व्यवसायिक शिक्षा पढ़े लोग नहीं थे परन्तु उन्होंने व्यवसाय में बहुत ऊंचाईयों को छुआ है और लाखों शिक्षितों को रोजगार दिया है। स्वामी रामदेव, आचार्य बालकृष्ण (पंतजलि योगपीठ वाले), महाशय धर्मपाल (एम.डी.एच. मसाले वाले), श्री सत्यानन्द मुंजाल (हीरो मोटरसाईकिल्स वाले), श्री धीरुभाई अंबानी आदि। इसका अर्थ यह हुआ कि धनवान बनने के लिए किसी विशेष प्रकार की पढ़ाई की ही आवश्यकता नहीं है। इसमें प्रारब्ध और इस जन्म के पुरुषार्थ के साथ अर्जित ज्ञान का महत्व होता है। अतः गुरुकुल में वेद और वैदिक साहित्य जिसमें आर्य व्याकरण भी सम्मिलित है, का अध्ययन करने वाला भी अपने पुरुषार्थ व इच्छा शक्ति से शिक्षा, धर्म, राजनीति, उद्योग, व्यापार, कृषि, प्रशासन आदि में अपने ज्ञान व अन्य क्षमताओं के आधार पर सुदृढ़ व सुस्थिर स्थान बना सकता है। हमें इस बात पर ध्यान न देकर कि शिक्षा रोजगारपरक हो, यह ध्यान देना है कि शिक्षा से मनुष्य की समुचित शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक, आत्मिक उन्नति हो। जब यह सब उन्नतियां होंगी तो हमारा अनुमान है कि प्रारब्ध और पुरुषार्थ का संयोग होने पर आर्थिक और सामाजिक उन्नति भी अवश्य ही होगी। गुरुकुल में वेद संबंधी अध्ययन करने के बाद व्यक्ति शिक्षक, पुरोहित, उपदेशक, नाना प्रकार के व्यवसाय आसानी से कर सकता है। आजकल कक्षा 10 व्यक्ति ही हिन्दी और साधारण अंग्रेजी व कम्प्यूटर आदि के ज्ञान से एक क्लर्क की नौकरी प्राप्त कर लेता है और लगभग बीस हजार या इससे अधिक रुपये मासिक धन कमाता

है। क्या गुरुकुल का विद्वान इतनी योग्यता अर्जित नहीं कर सकता कि वह अपने अध्ययन के बाद कुछ माह व वर्ष अंग्रेजी व कम्प्यूटर आदि का प्रशिक्षण प्राप्त कर ले और वेद प्रचार और अन्य रोजगार भी करे? हमें तो यह लगता है कि गुरुकुल का सुयोग्य स्नातक वह सभी कार्य कर सकता है जिसकी वह इच्छा करे, आवश्यकता केवल दृष्टि इच्छा शक्ति व संकल्प की है। अतः गुरुकुल में अध्ययन के दौरान उसे व्याकरण और वेद विषयों का अधिक से अधिक ज्ञान अर्जित करने का प्रयास करना चाहिये। शिक्षा पूरी करने के बाद वह आचार्य ऋण से उऋण होने के कार्य के साथ जिस प्रकार का कार्य या सेवा करना चाहता है उसका निर्धारण कर उसके लिए आवश्यक ज्ञान व प्रशिक्षण कुछ माह, एक वर्ष या कुछ अधिक में प्राप्त कर ले।

उपसंहार में हम कहना चाहते हैं कि गुरुकुल का उद्देश्य आदर्श वेद प्रचारक वा वेदोपदेशक बनाना है जो संसार की विभिन्न भाषाओं में उपयोगी व प्रासंगिक वैदिक साहित्य तैयार करें और सारी दुनियां वेदों की क्रान्ति कर दें। यदि गुरुकुलों के विद्यार्थी सरकारी नौकरी ही करने के लिए गुरुकुल में पढ़ेंगे तो आर्य समाज को प्रचारक, उपदेशक, शास्त्रार्थ महारथी, विद्वान, पुरोहित, धर्माचार्य, वेदज्ञ विद्वान नहीं मिलेंगे जिससे महर्षि दयानन्द का वेद प्रचार का आन्दोलन स्वतः समाप्त व अप्रासंगिक हो जायेगा। हमारा यह भी मानना है कि गुरुकुलों में ब्रह्मचारियों की संख्या सीमित होनी चाहिये। आजकल के गुरुकुलों में ब्रह्मचारियों की भरमार है जिससे उनकी शारीरिक व आत्मिक उन्नति अपेक्षानुसार नहीं हो पा रही है। स्वामी श्रद्धानन्द भी गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की सीमित संख्या के पक्षधर थे परन्तु गुरुकुल कांगड़ी में उनकी इस विषय में इच्छा चल न सकी। गुरुकुल में उन बच्चों को ही प्राथमिकता दी जानी चाहिये जिनका उद्देश्य अध्ययन के बाद नौकरी करना न होकर आर्य समाज व वेद की सेवा करना हो। गुरुकुल कांगड़ी के प्रसिद्ध स्नातक व वेदभाष्यकार विद्वान आचार्य डा. रामनाथ वेदालंकार ने अपनी छोटी उम्र में स्वामी श्रद्धानन्द जी को पत्र लिखकर उनसे परामर्श मांगा था जिसके उत्तर में स्वामीजी ने उन्हें लिखा था कि खूब दूध पीओ व फल खाओ, शारीरिक उन्नति कर बलवान बनों, खूब पढ़ों और हो सके तो स्नातक बन कर कुलमाता की सेवा करना। आचार्य रामनाथ जी ने स्वामीजी का यह आदेश शिरोधार्य कर आजीवन गुरुकुल माता की सेवा की और विशिष्ट सामवेद भाष्य सहित प्रभूत वैदिक साहित्य का प्रणयन किया। गुरुकुल में यदि वेद सेवा करने वाले बच्चों को ही पढ़ाया जायेगा तो इससे यह लाभ भी होगा कि दान से मिलने वाले साधनों का उन बच्चों पर अपव्यय नहीं होगा जो धर्म सेवा न कर अपना सारा जीवन धन कमाने में लगाना चाहते हैं। दान का सदुपयोग तभी हो सकता है जब गुरुकुल शिक्षा में दीक्षित विद्वान सरकारी नौकरी आदि न कर आर्य समाज और वेदों की सेवा करे। ऐसे लोगों के लिए तो सरकारी स्कूल व डीएवी कालेज व निजी विद्यालय हैं हीं। हमारे गुरुकुलों को मदरसों से भी शिक्षा लेनी चाहिये जहां बच्चे रोजगार के लिए अध्ययन नहीं करते।

हम समझते हैं कि गुरुकुलों का उद्देश्य आर्य समाज के वेद प्रचार आन्दोलन में सहायक होना है। इसके लिए वेद एवं वैदिक साहित्य के विद्वानों की आवश्यकता है जिन्हें संसार की लगभग 7 अरब से अधिक जनता में वेदों का सन्देश पहुंचा है। यदि गुरुकुलों में अध्ययनरत ब्रह्मचारी अध्ययनोपरान्त वेद प्रचार का कार्य छोड़कर सरकार या निजी क्षेत्र में रोजगार ढूंढते हैं तो हमें लगता है कि गुरुकुल का उद्देश्य विफल हो जाता है। हमारा ध्यान श्रेष्ठ वैदिक विद्वान, मधुभाषी वक्ता वा उपदेशक तथा अनेक भाषाओं के ज्ञाता, वेद भाष्यकार आदि बनाने पर केन्द्रित होना चाहिये। यदि इसमें हम सफल होते हैं तो गुरुकुल और आर्य समाज दोनों सफल कहे जायेंगे और यदि ऐसा नहीं होता तो फिर गुरुकुलों की प्रासंगिकता पर पुनः विचार करना होगा।

मनमोहन कुमार आर्य

మనం ప్రాచీనము: విద్యార్థులకు చేసిన అనుదో
 కీకల్పం పునాధారమైంది. అటువలె, మనము
 విజ్ఞాన కేంద్రం నుండి ఇంటివెళ్ళి, మన
 పీఠానికి కార్యక్రమం చేసిన గౌరవాన్ని గురి
 క్తము కలవరాం ప్రధాన కార్యదర్శి విజయ్ కుమార్ గారు
 అలాగే పేర్లనీ అభినందనలు తెలియజేసారు.



తెలుగుల గొప్పతనమును గూర్చి ప్రపంచమున నెక్కడ నెక్కడ వ్రాసినాడు. అందుచేతనే

యు. హానితరము చేయవలెనని, కష్టమునకు నష్టము కల్గ
 గలదు నిరూపిస్తూ, ఇతడు అరిమిన వీరు హానికర
 గనుక ప్రతీతి ప్రతి కష్టము హానికరమని అందె నిమిషం
 అనికల అనుభవం అతని ముఖంగా బహుస్థాయి చెప్పడు
 సకాశుడైన కోలుక మనస్సు మనిషిని నిరీకాశుని
 అది మరిచిపోయి హిందూ మతం అలలు నాశకాశుడను
 నిరకాశుడైన కిందుమని దేవుడు కోరు రూపులను
 లక్షణం అప్పు చెప్పిస్తారు. అది కనడమనప్పు అలాంటి
 చేయి పిల్లలకి వసించి కొన్ని సార్లు ప్రాయశ్చిత్తం చేసి అంద
 విస్తాసాలు సమకాశుని కుందికాదుగాని విడిచి వేసి
 సమహార అప్పులుగా మారుచున్న సత్యం అందుకే

బ్రాహ్మ తెలంగాణ ప్రభుత్వం ప్రస్తుతం చేపడుతున్న కాళ్ళ
 క్రమాల బాగానే ఉన్నాయని కని మరలర కాల్పుగా కాళ్ళ
 ప్రమాలు రూపొందించాలన్నారు

పెరవళ్ళ సర్పంచి నర్సారీ బుక్కా కదివరే అది బాగు
 పడుతుంది. ప్రస్తుత చిన్న బుక్కాలో సమస్యలు అవసర
 మని అనివేరి అధికారులచే నర్సారీ బుక్కాలో చదువు
 తెచ్చి ఉపాధ్యాయులు కను పులించి నర్సారీ బుక్కాలో చది
 వించాలని ముఖ్యమంత్రి జేఆర్ ముర్తులు అనుమతి ఇచ్చి
 వీరి ఉపాధ్యాయులు తమ పులించి నర్సారీ బుక్కాలో నేర్పు
 రాజకీయాల ఆ బుక్కా పులించుచున్నారు. ప్రధాని పాదే
 పులించి ప్రభుత్వాన్ని పాలించు తన బుక్కా ఉపాధ్యాయులు

- నివారణకు శాస్త్రోప శాస్త్రోప చర్యలు చేపట్టాలి
● తెలంగాణ ప్రభుత్వం
● ప్రాధాన్యాలను తేల్చుకోవాలి
● మోబీల్స్ మంచిది కాదు..
● తెలంగాణ విద్యార్థుల వేదక
● వార్షికోత్సవంలో స్వామి అగ్ని వేద

53531325

[illegible]

సంపూర్ణ తెలంగాణ ఇంకా రాలేదు

• ఆచార్య కోదండరాం

ఈనాడు, హైదరాబాద్: అనేక పోరాటాల అనంతరం పూర్ణ తెలంగాణలో అభివృద్ధి ప్రజాపత న్యాయం జరగా లు. అభివృద్ధి ఫలాలు ప్రజలందరికీ దక్కాలని తెలంగాణ విద్యార్థులకు మేధా గొర్రావుడలు, తెలంగాణ జైర్లన్ ఆకార్య కోదండరాం ఆకాంక్షలను అభివరం. హైదరాబాద్ లోని బందిర ప్రాంతాల్లో అభివృద్ధిలో తెలంగాణ విద్యార్థులకు వేదిక అయిపో వారితోనే ముగింపు వేడు కలు జరిగాలు. ఈ సందర్భంగా కోదండరాం మాట్లాడుతూ ఇప్పటికీ సంపూర్ణ తెలంగాణ రాలేదని, గుర్తు పోలన, ఉమ్మడి రాజధాని దీనికి నిదర్శనమన్నారు. ఉమ్మడిగా సంస్థ అన్నింటిని జ్ఞానమే విభజించాలన్నారు. తెలంగాణలోని అన్ని పక్షాలకు సమాన అవకాశాలుండాలని, ప్రజలందరికీ గౌరవప్రదమైన జీవితం ఉల్లేలా ప్రభుత్వం కార్యక్రమ రూపొందించాలన్నారు. ఆచార్య హరివిల్ నో మాట్లాడుతూ తెలంగాణ విద్యార్థులకు మేధా నిజమైన ప్రతిజ్ఞలలా ఉండాలని, విద్యార్థులకు ప్రతిజ్ఞలను చేసేటప్పుడు ప్రజలకు సర్దు మన్నారు పోలకులు సూతన బరహడి స్థాపించేయడ ప్రయత్నించాలని సూచించారు. తెలంగాణకు ముఖ్యమంత్రి ముచ్చటించి ఉప్పుదని, ఆక్రమణ ఉండాలని తెలిపారు. సురక్షాపాదకులను దీనిని ప్రయోగక్షేత్రంగా మార్చడం ప్రమాదం ఉన్నదన్నారు. తాను దీనినిదేమిట్లో పాటలు చేసిన నీలబలి కనిపిస్తే నేర్పుకుం పోయేటందుకై అనవసర అభ్యంతరాలు పెట్టకోవద్దని, తాదాగ్రంథర్ల సంస్థ చరిత్ర సమర్పించి ఉదయ లంకాపై అవకాశం వచ్చేయ అంశ లకు సంబంధించి చేసిన తాత్కాలిక కమిటీలో కాదు ఉన్నా వని, అది ప్రభుత్వం కల్గిన పదివి కాదన్నారు. విద్యార్థులకా తన హామీలు అందిస్తానని తెలిపారు. విద్యార్థులయల్లా లకు జానపదాభివృద్ధి నియమించడంపై ప్రభుత్వం ఘోషించి లు. ప్రైవేటు విద్యార్థులయల్లా, ఉమ్మడి యూనివర్సిటీ లు అమెరికనులు ఇక్కడనున్నారు. విద్యార్థులకు వేదిక అభివృద్ధిలు విచ్చేయ సంపూర్ణ తెలంగాణ తెలంగాణ విద్యార్థులకు మేధా ప్రయోగం అభివృద్ధి విద్యలు చేపడు త్తుందని, అయితే వాళ్లతోనే వేదిక సూచి ఉన్న ప్రభుత్వ పోషిస్తున్న ప్రభుత్వం మాత్రం వారిని రాజకీయ పోషితులకు అనుగుణంగా వేదిక విన కార్యక్రమ రూపొందించుకుంటో



జై హరిద్వేదేక తెలంగాణ విద్యార్థులతో కలిసి ఆచార్య కోదండరాం

తెలంగాణ విద్యార్థులకు వేదిక మహాసభలో మాట్లాడుతున్న తెలంగాణ జనాభా దైర్ఘ్య కోదండరాం

దని, అభివృద్ధి సాధన ఉద్యమం నుంచే పుట్టిందన్నారు. దేశవ్యాప్తంగా ప్రాంతీకరణ విద్యాలాలు గెలిచాయని, తెలంగాణ

తీర్మానాలు ఇవే..

- ★ ఆరు డిశంబరులుగా సీమాంధ్ర పరిషత్తులను రాజకీయ దోపిడీ, వీధిదడుగు గురిన తెలంగాణ ప్రజలు విమర్శలయ్యారు. ఈ విషయం సర్కూర్లో తెలంగాణ పునర్విలాసంలో భాగస్వామ్యమవుతాం.
- ★ తెలంగాణలోని ప్రైవేటు పరిశ్రమలో సైనికులకు 80 శాతం ఉద్యోగాలు ఇవాలి.
- ★ ప్రభుత్వం స్వచ్ఛంద విద్యార్థుల ప్రకటించాలి అభ్యంతరాలు చేసుకోకుండా రైతులో ఖరీదా నింపాలి.
- ★ వీరి పరిశ్రమలో కానరాకున్న సీమాంధ్ర అధిక ర్థాన్ని నిర్దేశించాలి. సీని పరిశ్రమకు రావడం దురుసుం కేటాయించి మంచిదికాదు. ఈ నిర్ణ
- ★ తెలంగాణ ప్రభుత్వం పోర్లకాపుక విధానంలో బిల్లు, కుటీర, మద్య పరగతి పరిశ్రమలపై ప్రత్యేకంగా పుష్టిసాధించాలి. ప్రతిభాపరిశ్రమైన యువతకు సరైన పుష్టివిద్యను అందించేయడం అత్యవసరం. విద్యార్థులయం పాఠ్యాలు చేయాలి.
- ★ సూతన పోర్లకాపుక విద్యార్థులను విశదించుకోవాలి. తెలంగాణలో ఇలాంటి విద్యార్థులకు పరిశ్రమలను ప్రోత్సహించడం.
- ★ ఉమ్మడి సంస్థం విభజన కక్షలు జరగాలి. హైదరాబాద్ పరిసరాధిపత్యం అంతం కావాలి.
- ★ ఉద్యోగం విభజన అక్షణం పుష్టిచేయాలి.
- ★ అమ్మం జిల్లాలోని ముంపు ప్రాంతాలను తెలంగాణ లోనే అంచాలి.
- ★ విద్యార్థులకు యక్షణమే పోర్లకాపుకలు అందే

యాల్ని పున:పరిశీలించాలి.

జాతీయ సర్వేయ విద్యార్థులు విజయవాడ సాంఘికాంధ్రా న్నారు. ప్రగతి కోసంపాలనలో భాగం-పైసల్లో భాగం

అనే నివారణలో తాము ముందుకు వెళ్తున్నామని, దీని వీధి సంఘం అభివృద్ధి చేసే ప్రసార మాట్లాడుతూ విద్యార్థులకు వేదికను సమర్పించి కీలకంగా తెలంగాణ జనాభా విన కుతాను పునర్విలాసం చేపట్టాల్సిన అవసరం ఉందని న్నారు. కార్యక్రమంలో ఆకార్య మురళీధర్, ఉమ్మడి సంఘ ప్రధాన కార్యదర్శి కారం రమేందర్ రెడ్డి పాల్గొన్నారు.

మాతన కార్మికులం, తెలంగాణ విద్యార్థులకు వేదిక సూతన కార్యదర్శిని ఎమ్మెల్యేగా సూతన అభ్యర్థి యాదయ్య ఉపాధ్యక్షులుగా శ్రీరంకాపు దిగ్గే పాండే, ఆర్. విజయకుమార్, అంబటి నాగయ్య, డాక్టర్ స్వర్ణలత, ముద్దూర రాజు, కార్యదర్శులుగా రత్నారావు, జైవిల్, డాక్టర్ జగదీశ్, డాక్టర్ వి.రమ, ఎ.విజయకుమార్, ఆంధ్రా సారాయలు, కోశాధికారిగా దీక్ష శ్రీనివాస్, పద్మిణీవర్, సైక్ల సర్కిల్ రెడ్డి, కోశాధికారిగా కోలా జనార్దన్, కార్యదర్శి సబ్బయ్యగా మల్లేపల్లి లక్ష్మయ్య, డాక్టర్ సావయ్య, జాబ్బు, సర్పంచ్ సాగిని, సుమిత, చంద్రశేఖర్, జి.బి. రాజు, మల్లెల రామనాథం, ప్రభాకరాచారి, డాక్టర్ కనక రాజు, బాలయ్య, డి.జనార్దన్, రాజారం ప్రకాష్, పి.లక్ష్మి, అశోక్, రామగిరి ప్రకాష్ ముఖ్యకర్తలు.

- ★ అభివృద్ధి పేరుతో హుస్సేన్ సాగర్ మట్లా అకాశాంధ్రా రాజ్యం నిర్మించడంపై పున:పరిశీలించాలి.
- ★ విమల కాలేయ, మన ఊరు-మన చరిత్ర కార్యక్రమం చేపట్టిన ముఖ్యమంత్రికి, రాష్ట్ర ప్రభుత్వానికి అభినందనలు.
- ★ అన్న ప్రభుత్వం జలస్థానం అభివృద్ధికి అవసరం వైసీ ఇంజనీర్, కేటాయించాలి. దీని సభాపై సమర్పించాలి.
- ★ కర్ణాటకపై పదికాల్ని అభివృద్ధిల పేరుమిడి పరిపాలించాలి.
- ★ ఎన్. ఎన్. సుప్రీమ్ ద్వారా దీక్ష, అభివృద్ధిల యామ మంత్రి పుష్టిచేయాలి. ఎన్. ఎన్. సుప్రీమ్ పుష్టిచేయాలి. పుష్టిచేయాలి. పుష్టిచేయాలి. పుష్టిచేయాలి.

'आर्य समाज और इसके पतितोद्धार कार्य की एक सर्वोत्तम प्रेरणाप्रद घटना'

मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

पराधीन भारत में एक गुजराती जन्मना व कर्मणा ब्राह्मण महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा 10 अप्रैल, सन् 1875 को मुम्बई के काकड़वाड़ी स्थान पर प्रथम आर्य समाज की स्थापना विगत 5,000 वर्षों में एक सर्वतोमहान क्रान्ति के सूत्रपात का ऐतिहासिक दिवस है। हमें देश में ऐसी कोई संस्था या आन्दोलन विगत 5,000 वर्षों में दिखाई नहीं देता जिसने प्राणीमात्र की समस्याओं के मूल स्वरूप व उनके हितों को गम्भीरता से समझा हो जो हमारे देश में विद्यमान रही हैं। महर्षि दयानन्द और आर्य समाज ने देश की छोटी व बड़ी सभी समस्याओं को समझा ही नहीं अपितु इनके समाधान का सुस्पष्ट विधान भी प्रस्तुत किया। आर्य समाज के इस प्राणीमात्र के हितकारी कार्यों का प्रायः सभी मत-मतान्तरों व इतर समाकालीन व भावी संगठनों ने अपने अज्ञान व निहित स्वार्थों के कारण विरोध ही किया। आज भी स्थिति यही है। आर्य समाज की विचारधारा का आधार ईश्वरीय ज्ञान वेद पर आधारित होने के कारण, जो कि पूर्णरूपेण सत्य पर स्थित है, इस कारण यह संस्था अपने गुणों, ईश्वर की कृपा और इसके निष्ठावान सेनानियों के तप व त्याग के कारण फलती-फूलती आ रही है। आज कई क्षेत्रों में देश ने आशातीत सफलतायें प्राप्त की हैं। इस स्थिति में यह भी सत्य है कि धार्मिक जगत में हम शताब्दियों पूर्व जहां थे शायद उससे भी पीछे गये हैं। इसका कारण है कि अवैज्ञानिक व अन्धविश्वासों पर आधारित मतों की संख्या में भारी वर्द्धि हुई है। ऐसा लगता है कि आज आधुनिक काल में भी अधिकांश लोग जिनमें उच्च शिक्षित लोग भी सम्मिलित हैं, धर्म के वास्तविक अर्थ व महत्व से अपरिचित हैं या फिर वह अपने अज्ञान व स्वार्थों के कारण सत्य को स्वीकार करना नहीं चाहते और अनावश्यक विरोध करते हैं। महर्षि दयानन्द ने उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में आर्य समाज की स्थापना कर जो समग्र सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक वैचारिक क्रान्ति की थी उसे हम वेदों पर आधारित सर्वांगीण क्रान्ति का नाम दे सकते हैं। इसका मुख्य उद्देश्य तो देश व संसार से सभी प्रकार के अज्ञान को मिटाना था जो कि उन्नति में सबसे बड़ा बाधक होता है। अज्ञान मिटाने से सभी प्रकार के अन्धविश्वासों व कुरीतियों पर स्वमेव विराम लगता है। आज हमारे पास धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं अन्य सभी क्षेत्रों से सम्बन्धित पूर्ण ज्ञान उपलब्ध है। यह ज्ञान महाभारत काल व उसके कुछ वर्षों बाद विलुप्त हो गया था जो महर्षि दयानन्द के प्रयासों एवं उनके द्वारा स्थापित आन्दोलनात्मक संगठन आर्य समाज के त्याग व तपस्या तथा बलिदान की भावनाओं के कारण आज सर्वत्र विद्यमान है। **महर्षि दयानन्द की सबसे बड़ी खोज यह थी कि क्या ईश्वर ने सृष्टि के बनाने के बाद कोई ज्ञान मनुष्यों के हितार्थ दिया था या नहीं?** महर्षि दयानन्द की खोज व अन्वेषण से यह सिद्ध हुआ कि ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा के माध्यम से आदिकाल व भावी पीढ़ियों के लिए चार वेद, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद का ज्ञान दिया था। वेद क्या हैं? वेद मनुष्य को अपना जीवन ज्ञान-विज्ञान के आधार पर व्यतीत करने वाली सब सत्य मान्यताओं एवं सिद्धान्तों का समुच्चय व संहितायें हैं। वेदों का अनुयायी व जानकार ही सच्चा जीवन व्यतीत करता व कर सकता है। अन्य बन्धु जो वेद के ज्ञान से अनभिज्ञ हैं, उनका जीवन परमार्थ के नाममात्र तथा स्वार्थ पर ही अवलम्बित होता है। यदि कोई वेदों का जानकार भी स्वार्थ में फँस कर बुरा काम करता है तो उसमें वेद का कसूर नहीं है अपितु उस व्यक्ति की अपनी कमियां हैं। महर्षि दयानन्द ने वेदों के आधार पर विश्व के मनुष्य समाज का जीवन सफल व सुखमय बनाने के लिए मूर्तिपूजा, अवतारवाद, फलितज्योतिष, वेदविरुद्ध ईश्वर

उपासना-पूजा पद्धति का विरोध, छुआछूत का विरोध, शिक्षा का स्त्री व शूद्रों सहित सबको समान अधिकार का समर्थन, सती प्रथा-बेमेल विवाह का विरोध तथा गुण-कर्म-स्वभावानुसार उचित आयु में युवक-युवतियों के विवाह आदि का प्रचार किया। विधवा विवाह का भी अनेक परिस्थितियों एवं आपद-धर्म के रूप में समर्थन किया। उन्होंने सर्वप्रथम दलितोद्धार व पतितोद्धार की मजबूत नींव भी डाली। इस दिशा में आर्य समाज ने जो कार्य किया है वह अन्य किसी ने नहीं किया है।

महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की केवल स्थापना ही नहीं की अपितु उन्होंने वेद के आधार पर मानव जाति की समग्र उन्नति का प्रयास अपने सदुपदेशों, प्रवचनों व व्याख्यानों, शास्त्रार्थों तथा सत्यार्थ प्रकाश आदि अनेक ग्रन्थों के लेखन व प्रकाशन द्वारा किया। वह प्रातः 3 बजे ही निद्रा त्याग कर उठ जाते थे और अपनी वेद सम्मत दिनचर्या आरम्भ कर देते थे। दिन का एक-एक क्षण वह अपने उद्देश्य की पूर्ति में लगाते थे और रात्रि 10 बजे शयन करते थे। उनका शयन भी एक प्रकार का ईश्वर का ध्यान ही हुआ करता था। उनकी वेशभूषा में एकमात्र एक कौपीन होता था। दिसम्बर-जनवरी-फरवरी की शीत व शिशिर ऋतु में भी वह बिना छत के किसी नदी के किराने सिरहाने ईंटे लगाकर या फिर अन्यत्र एकान्त स्थान पर रहा करते थे। उनके जैसा तप, त्याग व पुरुषार्थ इतिहास में प्रसिद्ध किसी महापुरुष में नहीं पाया जाता। वह अपूर्व ऐतिहासिक महापुरुष थे तथा उनकी अपने गुणों में किसी महापुरुष से समानता नहीं है। इस प्रकार से एक दिन के 24 घंटों में से उन्होंने 18 घंटे काम कर पुरुषार्थ की पराकाष्ठा का कीर्तिमान स्थापित किया। उन्होंने सन् 1875 में आर्य समाज की स्थापना से 30 अक्टूबर, 1883 को अपने देहत्याग-मृत्यु पर्यन्त के 8 वर्ष 6-7 महीनों में अभूतपूर्व कार्य किये। वह सत्य व ज्ञान के प्रचारार्थ देश के अधिकांश भागों में पदयात्रा व उन दिनों के असुविधापूर्ण साधनों द्वारा पहुंचे और लोगों को अपनी वाणी से सत्य के मूलस्वरूप से परिचित कराया जिससे समाज के धार्मिक दृष्टि से जागृत व निःस्वार्थ भावना के लोग उनके अनुयायी ही नहीं बने अपितु उन्होंने नाना विध देश और समाज की सेवा की।

दलितों एवं पतितों के उद्धार के लिए आर्य समाज ने उल्लेखनीय सेवा की है जो कि इतिहास की वस्तु है। उनसे पूर्व जिन स्त्री व शूद्रों को वेद का शब्द बोलने पर जघन्य दण्ड दिया जाता था, आर्य समाज के द्वारा उनको वेदों का ऐसा विद्वान बनाया गया जिनके समकक्ष विद्वान महाभारत काल के बाद स्वयं को सनातनी कहने वाले पौराणिक बन्धु स्वयं में ही न तो उत्पन्न कर सके और न ही उनकी विचारधारा व मान्यताओं के आधार पर ऐसा होना सम्भव है। इस प्रसंग में हम आर्य समाज से जुड़ी पतितोद्धार की एक प्रेरणादायक घटना प्रस्तुत करते हैं।

सन् 1964 में आर्य जगत के अबोहर-पंजाब के प्रसिद्ध विद्वान प्राध्यापक राजेन्द्र जिज्ञासु शोलापुर से आर्य समाज, यादगिरी-गुलबर्गा के निमन्त्रण पर इसके रजत जयन्ती समारोह में भाग लेने पहुंचे। यादगिरी पहुंच कर आप श्री रामचन्द्र जी वर्मा प्रधान, आर्य समाज से मिलने सुरपुर जाने वाली बस में सवार हुए। यह बस यात्रियों से पूरी तरह से भरी हुई थी जिसमें खड़ा होना भी कठिन था। बस में एक विचित्र घटना घटी जिसका वर्णन जिज्ञासुजी ने अपने संस्मरणों में किया है। जिज्ञासु जी को किसी ने पुकारा, "पण्डितजी ! आईये, यहां बैठिये।" हैदराबाद में आर्य समाज के विद्वानों को पण्डितजी कहकर ही पुकारने की परम्परा है। जिज्ञासु जी ने बस में चारों ओर देखा, परन्तु उसमें कोई भी आर्य विद्वान दिखाई नहीं दिया। आवाज दोबारा सुनाई दी। अब उन्होंने देखा कि एक युवक उन्हें बुला रहा है। वह उसके समीप गये। उस अज्ञात युवक की सज्जनता देखकर जिज्ञासुजी आश्चर्य में पड़ गये। अपनी सीट छोड़ते हुए, उसने जिज्ञासुजी को बैठने के लिए कहा। जिज्ञासु जी ने उसका धन्यवाद किया और उसे अपनी सीट पर ही बैठे रहने के लिए कहा। वह उस युवक को पहचानते नहीं थे। उसका धन्यवाद करना और सीट न लेना ही उस समय उनका कर्तव्य था जो कि उन्होंने किया।

युवक जिज्ञासु जी की स्थिति को समझ गया। उसने कहा, “आप तो मुझे नहीं जानते परन्तु मैं आपको जानता हूँ। आप पहले भी हमारे नगर के आर्यसमाज के प्रधान श्री रामचन्द्र जी वर्मा के पास आये थे, तब मैंने आपको देखा था और आपके प्रवचन सुने थे।” उस भरी बस में एक और बात कह कर उसने जिज्ञासु जी व बस के यात्रियों को चौंका दिया। वह युवक बोला, “मैं वैश्या का पुत्र हूँ। हमारे नगर में देवदासियों की कन्याएं वेश्या बनती हैं। वर्मा जी की कृपा दृष्टि मुझ पर पड़ी। आपने मुझे प्रेरित किया, सम्भाला और पढ़ने की प्रेरणा दी। मैं उनकी कृपा से अध्यापक बन गया। मेरा परिवार अब उस कीचड़ वा दलदल से निकल गया है। मेरी बहिनों के भी विवाह हो गये। यह सब आपके रामचन्द्र जी वर्मा की कृपा का फल है।”

जिज्ञासु जी उस युवक की भरी बस में कही इन बातों को सुनकर व उसके साहस को देखकर भौचक रह गये। कोई व्यक्ति कभी अपनी कमजोरी का सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित नहीं करता? जिज्ञासु जी लिखते हैं कि “उसकी बातें सुनकर मेरा सीना गर्व से फूल गया कि मैं वेदोद्धारक, देश सुधारक और बाल ब्रह्मचारी ऋषि दयानन्द का शिष्य हूँ जिसने प्राणवीर पं. लेखराम जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी से लेकर श्री रामचन्द्र वर्मा तक सैकड़ों दिलचले व दीन सेवक पैदा किये। श्री रामचन्द्र जी वर्मा ने उसको पढ़ने की ही प्रेरणा नहीं दी, उसे रामचन्द्र जी आदि सज्जनों के सहयोग से सर्विस भी मिल गई। उस युवक की बहिनों का भी उद्धार हो गया। पतितोद्धार की तो मैंने अनेक कहानियां सुनीं व पढ़ी हैं परन्तु बस में घटी इस घटना सदृश कोई घटना कभी सुनने पढ़ने को नहीं मिली। किसी पतित का बहिष्कार व तिरस्कार तो हर कोई कर सकता है परन्तु गिरे हुए को उठाना तो कोई विरले मनुष्य ही कर सकते हैं। इसी का नाम परोपकार है। यही मनुजता है। यही धर्म का सार है।”

इस एक घटना से ही आर्य समाज के अन्य देश-समाज हितकारी कार्यों का अनुमान किया जा सकता है। हम संक्षेप में यह भी बताना चाहते हैं कि समय-समय आर्य पर समाज में मुस्लिम मत के लोग भी शामिल हुए और आर्य समाज में अपना उच्च स्थान बनाया। इन विभूतियों में स्वामी विज्ञानानन्द जी और स्वामी सत्यपति जी का नाम लिया जा सकता है। आर्य समाज के गुरुकुलों में दलित वर्ग के बड़ी संख्या में लोगों ने शिक्षा पाई और अनेक वेदों के विद्वान, वेदों के भाष्यकार, भजनोपदेशक व आर्य समाज के अधिकारी व प्रचारक बने। हमारी मित्रमण्डली में भी अनेक मित्र दलित परिवारों से रहे हैं व हैं जिनका सामाजिक स्तर काफी उन्नत हुआ। दलित-पतितोद्धार के साथ आर्य समाज ने समाज के अनेक व्यक्तियों को फर्श से उठाकर अर्श पर पहुंचाया है। किसी गांव में एक भेड़-बकरी चराने वाले बालक को गुरुकुल में पढ़ाकर उसे न केवल विद्वान ही बनाया अपितु वह आर्यों की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के प्रधान भी बने। संन्यास लेकर वह सभी के पूज्य भी बने। आज पौराणिकों में संन्यास का अधिकार केवल ब्राह्मण जन्मना लोगों को ही है जबकि आर्य समाज में कोई भी योग्य विद्वान संन्यास ग्रहण कर समाज व देश सेवा कर सकता है। इस दृष्टि से भी आर्य समाज सच्चा पारस मणि पत्थर सिद्ध होता है जो साधारण अशिक्षित व संस्कारहीन लोगों को भी महनीय-स्वर्णमय जीवन का धनी बना देता है।

लेख को विराम देते हुए हम पाठकों से जीवन की उच्चाईयों को प्राप्त करने के लिए आर्य समाज का साहित्य मुख्यतः सत्यार्थ प्रकाश, महर्षि दयानन्द व स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन चरित और आर्य समाज का इतिहास पढ़ने की प्रेरणा करेंगे। आर्य समाज के विचारों को अपनाकर ही देश का कल्याण व उद्धार हो सकता है। इसके लिए हमें वेदों का अध्ययन कर वेदानुसार ही अपना आचरण बनाना होगा। ऐसा करके ही देश राम-राज्य बन सकता है। अन्य कोई मार्ग देश को सुदृष्ट व अखण्ड बनने तथा उन्नति पर ले जाने नहीं है। वैदिक राज्य ही सुराज व राम-राज्य से अलंकृत हो सकता है।

‘क्या हमारा अब तक का जीवन व्यर्थ चला गया है?’

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

हम अपने सारे जीवन भर यह भूले रहते हैं कि हमारे जीवन का उद्देश्य क्या है। हम संसार में क्यों आये हैं? न हमें इसके बारे में माता-पिता से कोई विशेष ज्ञान मिलता है और न ही हमारे आचार्य व अध्यापक ही विद्यालयों में इस विषय के बारे में पढ़ाते या बताते हैं। माता, पिता व आचार्य का उद्देश्य यही होता है कि हम खा-पी कर स्वस्थ बने और शिक्षा पाकर अच्छा रोजगार प्राप्त कर लें और विवाह, सन्तान, धन, सम्पत्ति, सुविधापूर्ण आवास, कार आदि खरीद कर सुखी जीवन व्यतीत करें। यही आम मनुष्य के जीवन का उद्देश्य उसकी जीवन शैली को देखकर विदित होता है। कभी कोई विचार ही नहीं करता कि क्या यही वास्तविक जीवन का उद्देश्य है? महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन में इस प्रश्न पर विचार किया था। उन्हें ज्ञात हुआ था कि नहीं, जीवन का उद्देश्य यह नहीं है अपितु ज्ञान की प्राप्ति से ईश्वर का साक्षात्कार और सद्कर्मों से जन्म मरण से मुक्ति प्राप्त करना ही जीवन का उद्देश्य है।

प्रिंसीपल श्री ज्ञानचन्द्र जी हिसार आर्य समाज के प्रसिद्ध व प्रतिष्ठित विद्वान थे। आप अत्यन्त अध्ययनशील व्यक्ति थे। उनके जीवन में अनेक विशेषतायें थीं। आपने सन् 1939 के हैदराबाद की मुस्लिम रियासत में बहुसंख्य हिन्दु प्रजा पर वहां के निजाम और उनके अधिकारियों के धार्मिक भेदभाव एवं अत्याचारों के विरुद्ध “राष्ट्रीय आर्य सत्याग्रह” में भाग लिया था और जेल भी गये थे। भारत के प्रथम उपप्रधान मंत्री एवं गृहमन्त्री सरदार वल्लभ भाई पटेल ने इस सत्याग्रह की प्रशंसा की थी। आर्य जगत् के विद्वान और आर्य गजट पत्र के पूर्व सम्पादक चौ. वेदव्रत, स्वामी ओमानन्द जी तथा प्रो. उत्तम चन्द शरर जेल में आपके साथ थे।

प्रिंसीपल ज्ञान चन्द्र जी ने संन्यास लेने का निर्णय किया। विचार करने के बाद उन्होंने आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान एवं 300 से अधिक ग्रन्थों के लेखक श्री राजेन्द्र जिज्ञासु, अबोहर से कहा कि वह कुछ दिन उनके पास अज्ञातवास के लिए आना चाहता हैं। प्रवास में वह कुछ चिन्तन, मनन व स्वाध्याय करना चाहते हैं, परन्तु वहां व्याख्यान नहीं देंगे। जिज्ञासु जी ने उन्हें आमंत्रित किया और उनके निर्णय की प्रशंसा की। अबोहर में उनके निवास व अन्य सभी प्रकार के प्रबन्ध कर दिये गये। प्रिंसीपल महोदय अबोहर आये और निवास किया। यहां उनके दर्शन करने सायंकाल के समय अनेक श्रद्धालुजन आते रहे, अतः प्रिंसीपल महोदय द्वारा उन्हें उपदेश किया जाता रहा। यहां प्रिंसीपल महोदय ने जिज्ञासु जी को आर्य जगत् के नाम अपनी ओर से एक सन्देश लिपिबद्ध कराया जिसका प्रकाशन कर स्थानीय जनता में वितरित कर दिया गया। एकदिन जिज्ञासुजी से आपने कहा कि आप मुझे स्वाध्याय के लिए उपयोगी कोई आध्यात्मिक ग्रन्थ दीजिये। इसका पालन कर जिज्ञासु जी ने उन्हें वेदभाष्यकार पं. हरिशरण सिद्धान्तालंकार का सामवेद भाष्य ले जाकर उन्हें दिया। आपने भक्तिभाव से सामवेद का अध्ययन किया। इसके कुछ दिन बाद जब जिज्ञासु जी प्रिंसीपल ज्ञान चन्द्र जी से मिले तो आपने उनसे कहा कि “जिज्ञासु जी ! मेरा तो अब तक का सारा जीवन ही बेकार ही गया।” इसके आगे वह बोले कि “मैंने आज तक प्रभु की अमरवाणी वेद का स्वाध्याय कभी नहीं किया। बस अपवाद रूप में ही कुछ वेद मन्त्र कभी देखे व पढ़े। वेदों की महत्ता को सुनता तो अवश्य रहा हूं। पहली बार ही आपने यह भाष्य लाकर मुझे अमरवाणी करवा दिया।” जिज्ञासुजी यह शब्द सुनकर हैरान हो गये। वह जानना चाह रहे थे कि इसके पीछे उनकी भावना क्या है। जिज्ञासु जी बताते हैं कि वह प्रिंसीपल ज्ञान चन्द्र जी के छोटे भाई मास्टर रत्नचन्द्र जी के शिष्य रहे हैं। बाद में वह श्री ज्ञानचन्द्र जी के भी शिष्य बने। उनका जिज्ञासु जी से बहुत स्नेह था और अपने इस शिष्य का नाम न लेकर उन्हें हमेशा ‘जिज्ञासु जी’ कहकर पुकारते थे। यह उनका बड़पन्न था। प्रिंसीपल साहिब के देश भर में बड़ी संख्या में समर्पित भक्त व प्रेमी थे, उन्हें व सेठ एवं लीडरों को छोड़कर वह उन एक साधारण विप्र के यहां अज्ञातवास हेतु आये थे। अपने जीवन के बेकार होने की बात कहने के बाद उन्होंने सामवेद भाष्य को खोलकर एक मन्त्र और उसका अर्थ पढ़कर सुनाया। मन्त्र में कहा गया है कि “इस जन्म में जहां हम छोड़ते हैं आगे की यात्रा वहीं से आरम्भ

होती है जैसे कि मां जब बच्चे को दूध पिलाती है तो दाएं स्तन का पान करके वह बच्चा बाएं स्तन का पान करने लगता है। बाएं का पान करते समय वह नये सिर से यह किया नहीं करता। जितना दूध पी चुका है अब उससे आगे पीता है। जितना पेट पहले भर चुका था, वह तो भर चुका, अब तो वह और पी कर बची भूख को शान्त करता है।" उन्होंने आगे कहा कि अब वह शेष जीवन वेद का ही स्वाध्याय करेंगे और इस जीवन में जो न्यूनता रहेगी वह अगले जन्म में पूरी करेंगे। उन्होंने तब एक पंक्ति बोली थी जिसका आशय था कि 'ईश्वर तेरी वेदवाणी है अनमोल, इसमें अमष्ट भरा हुआ है विभोर।' यह रहस्य सामवेद के एक मन्त्र के भाष्य ने खोला। श्री ज्ञान चन्द्र जी ने जिज्ञासु जी को कहा कि 'यदि उन्हें पहले यह बात समझ में आ जाती तो वह बहुत कुछ पाकर आगे निकल जाते।' श्री ज्ञानचन्द्र जी देश भर में उपनिषदों की कथा करने के लिए बहुत प्रसिद्ध थे। उनकी उपनिषदों की कथायें बहुत रोचक, प्रेरक व चिचारोत्तेजक होती थी। उनकी भाषा पंजाबी उच्चारण बहुल थी परन्तु उनका चिन्तन गहन था व उनके विस्तृत अध्ययन का प्रभाव श्रोताओं पर जादू का सा होता था। प्रिंसीपल ज्ञानचन्द्र ने जो बात कही कि मेरा तो अब तक का सारा जीवन ही बेकार गया। इसकी जानकारी देकर उन्होंने वेदाध्ययन को उन्होंने अमष्ट के तुल्य बताया। इस प्रेरणादायक प्रसंग से हम व सभी लोग लाभ उठा सकते हैं। हमने

आरम्भ में महर्षि दयानन्द जी के जीवन के उद्देश्य विषयक अन्वेषण और परिणामों का उल्लेख किया है। हमने भी लगभग 40 वर्षों से वेद एवं वैदिक साहित्य के अध्ययन में व्यतीत किए हैं। हम इस प्रसंग में यह भी जोड़ना चाहेंगे कि महर्षि दयानन्द का विख्यात ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश संसार के धार्मिक साहित्य का सर्वाधिक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। प्रत्येक व्यक्ति को उसका अध्ययन और उसकी सत्य शिक्षाओं पर आचरण कर अपना जीवन सफल करना चाहिये। जिस

सामवेद भाष्य की चर्चा उपर्युक्त पंक्तियों में की गई है, वह वैदिक साहित्य के प्रकाशक 'श्री घड़मल प्रह्लादकुमार आर्य धर्मार्थ न्यास, ब्यानिया पाडा, हिण्डोनसिटी-राजस्थान' से उपलब्ध है। पत्र भेजकर डाक से मंगाया जा सकता है। हमारा अनुभव है कि प्रिंसीपल ज्ञानचन्द्र जी का अपने और हम सभी के जीवन के बारे में निष्कर्ष पूरी तरह से यथार्थ है। इसे लेख की पंक्तियों से यदि पाठको को कुछ लाभ होता है तो हमारा श्रम सफल होगा।

एक मार्च २०१५ को निगम नीडम गुरुकुल का दशाब्दि महोत्सव। मुख्य अतिथि स्वामी आर्यवेशजी, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा।

निगमनीडम् - वैदगुरुकुलम्

महर्षि दयानन्द मार्ग, पिडिचेंड, गज्जेल, मेदक (तेलंगाणा) 502278



प्रथम दशाब्दि वार्षिकोत्सव

महर्षि दयानन्द प्रवेशद्वार का भव्य उद्घाटन समारोह



1 मार्च 2015, रविवार, प्रातः 8 बजे से सायं 5 बजे तक

वेद और वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के निमित्त महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जिस ज्ञानज्योति को प्रज्वलित किया था, उसे भारत के दक्षिण भाग में भी विस्तृत करने के महान् उद्देश्य से 'निगम नीडम-वैदगुरुकुलम्' की स्थापना अप्रैल 3, 2004 में की गई थी। ईश्वरानुग्रह से एवं दानीमहापुरुषों के सततश्रमों से स्वल्पावधि में ही यह गुरुकुल अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होने में पूर्ण सफल रहा है। अब इस गुरुकुल में 1 मार्च 2015, रविवार के दिन 'अपेक्षित-प्रलयजयन्त्र की पूर्णावृत्ति' के साथ 'प्रथम दशाब्दि समारोह' मनाया जा रहा है। इस भावन अवसर पर 'महर्षि दयानन्द प्रवेशद्वार' का उद्घाटन तथा 'समारोह' का विमोचन समारोह 'पूज्य श्री स्वामी आर्यवेशजी' (प्रधान, सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा, दिल्ली) के कल्मषलों से सम्पन्न किया जा रहा है साथ में कुछ प्रशस्तियों का विमोचन भी किया जायेगा। आप इस भव्य समारोह में सपरिवार एवं बन्धु, मित्रों के साथ अधिक से अधिक संख्या में भाग लेकर सत्संग का लाभ उठावें।

यज्ञद्वारा : श्रीमती, श्री डॉ. वसुधा शास्त्री, अरविन्द शास्त्री जी
मुख्य अतिथि : श्रीमान् निम्मगड् प्रसाद जी (निम्मगड् फाउण्डेशन, हैदराबाद)
विशिष्ट अतिथि : श्रीमान् विठ्ठलराव जी (प्रधान, आर्यप्रतिनिधि सभा, तेलंगाणा, आन्ध्रप्रदेश)
सम्मान्य अतिथिगण : श्री एम. लक्ष्मीकान्तारव जी (प्रशासक), श्रीविष्णुलाल सत्तारैड जी, श्रीमान् श्रीधर राव जी (भारत स्वामिमान, तेलंगाणा, आन्ध्रप्रदेश), श्री आकुल विश्वेन्द्र आर्य जी

अमन्त्रित विद्वान्
 वैदिक विद्वान् डॉ. श्री विजयवीर विद्यालंकार जी, डॉ. श्री मखन चैन्प्या जी (उस्मानिया यूनिवर्सिटी),
 वाष्मीप्रवर श्री आचार्य सत्यवीर जी, श्रीमती, श्री ओरिगण्टि लक्ष्मीदेवी-बेकट्टरगुप्ता जी, श्रीमती, श्री कुरपाटि कल्याणी-रवीन्द्रनाथ जी, श्रीमती, श्री राविकण्ठ ज्योतिश्री-दीनदयाल जी

यजमान दम्पती
 श्रीमती, श्री राविकण्ठ सुरीला-कुण्मूर्ति जी, श्रीमती, श्री राविकण्ठ सत्यश्री-रामदेव जी, श्रीमती, श्री राविकण्ठ रोजाश्री-चन्द्रकाश जी, श्रीमती, श्री एच. राजलक्ष्मी-डॉ. हनिमिरैडि (D.A.S.) जी (नर्सरस्पेटा, गुन्टूर)

सम्मान
 श्रीमान् मुख्यालय धर्मवीर योगाचार्य जी को 'आर्यभामाग्राह' उपाधि से एवं 'श्रीमान् राविकण्ठ कुण्मूर्ति जी' को 'आर्यशिरमण' उपाधि से सम्मानित किया जावेगा।

संसार आगन्तुक महानुभाव अपने ज्ञान की पूर्व सूचना अपश्य देवें और इस पुनीत कार्य के होता बनकर अधिक से अधिक सहयोग प्रदान करें। निगम नीडम् को प्रदत्त दान 80% के अनन्तत आयकर से मुक्त है।

दशरथान्वीत अमृत स्नान (125 वर्षा उत्सव)
 मार्च 1-2-3-4-5-6-7-8-9-10-11-12-13-14-15-16-17-18-19-20-21-22-23-24-25-26-27-28-29-30-31

संपर्क हेतु दायक सञ्चार्य: 09440721958, 07660060724, 07660080749, 07036267944, 07036267944, 09949810075
 Email: nigamanandam@gmail.com, Website: www.nigamanandam.org.in

निवेदक न्यासी गण
 मुरली ब्रह्मगौरी (संरक्षक), उदयनाथार्य (संस्थापक एवं अध्यक्ष), महि रंगध्या (कोषाध्यक्ष), एम. मन्मथ आर्य, राविकण्ठ रामदेव, मूलाराम चौधरी, आकुल विश्वेन्द्र आर्य, विश्वरूप, वेदायन, कीरप्रदया, सज्जीव कुमार शर्मा, वृध्नाय, श्रीहरि,

హైదరాబాద్ కా ముక్తి సంఘర్ష

(హిందీ బాషాలో)

(నిరంకుశ నిజాం అత్యాచారానికి
వ్యతిరేకంగా పోరాడతూ ఆర్థిక సమాజ చరిత్ర)
గ్రంథకర్త : డాక్టర్ ఆనంద్ రాజ్ వర్మ
ప్రతి పుస్తకము యొక్క ముఖ్యము : రూ.

120/-

5 పుస్తకములు కొన్న వారికి తక్కువ రేటుతో
అనగా రూ. 80/- పతి పుస్తకము ఇవ్వబడును

హైదరాబాద్ కా ముక్తి సంఘర్ష



డా. ఆనందరాజ్ వర్మా

ప్రచారార్థము ఆర్థికసమాజ అణిమకారులు,
జేతాపాకులు, అణిమక సంఖ్యలో ప్రత్యేకము
కొనుగోలు చేసి ఇంటింటా చదువరులైన
యువకులకు, విద్యార్థులకు అందజేసి
సహకరించును విజ్ఞప్తి.

అణిమచు స్థానము :

ఆర్థికప్రతినిధి సభ కార్యకర్తలము

సుల్తాన్ బజారు - హైదరాబాదు.

సంప్రదించుటకు ఫోన్ నెంబర్లు :

040-2475 6983, 66758707

అణిమక ప్రత్యేక కొనుగోలుకై తగిన రేటుకు

అణిమచును. 9849560691

హైదరాబాద్ కా ముక్తి సంఘర్ష

(నిరంకుశ నిజాంశాహీ కే దౌర మే అన్యాయ
और अत्याचारों के विरुद्ध आर्य समाज के
संघर्ष का इतिहास)

लेखक : डॉ. आनन्द राज वर्मा

मूल्य : रु. १२०/- प्रति पुस्तक

अधिक पुस्तकें खरीदने पर

रु. ८०/- प्रति पुस्तक

हैदराबाद का मुक्ति संघर्ष



डा. आनंदराज वर्मा

प्रचारार्थ आर्य समाज के अधिकारी एवं
उत्साही कार्यकर्ता अधिकाधिक प्रतियों को
खरीद कर घर-घर, पाठशाला, युवावर्ग एवं
छात्रों में वितरित कर सहयोग दें।

प्राप्ति स्थान : कार्यालय

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाणा

सुल्तान बाजार - हैदराबाद

संपर्क सूत्र : फोन. नं. :

040-2475 6983, 66758707

9849560691

చేపండా

విజ్ఞప్తి

చదివించండి

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆంధ్ర - తెలంగాణ

నూతన పుస్తక ప్రచురణలు

ఆర్య సమాజమనగానేమి?

వైదిక యజుర్ము, మహర్షి దయానందుని

జీవిత విశేషాలు,

ఆర్య సమాజ నియమములు విశ్లేషణ

హిందీ మూలము : మహాత్మా నారాయణ స్వామి గారు

“ఆర్య సమాజ్ క్యా హై?”

తెలుగు అనువాదము : శ్రీ

అనంతార్య గారు

ప్రతి పుస్తకము యొక్క

ముఖ్యము రూ. 30/-

10 పుస్తకములు కొన్న

వారికి తక్కువ రేటుతో

అనగా రూ. 20/- పతి

పుస్తకము ఇవ్వబడును

ప్రచారార్థము ఆర్యసమాజ

అధికారులు, ఔత్సాహికులు,

అధిక సంఖ్యలో ప్రతులును

కొనుగోలు చేసి ఇంటింటా చదువరులైన

యువకులకు, విద్యార్థులకు అందజేసి

సహకరించుట విజ్ఞప్తి.

“ఋజుంచు స్థానము : ఆర్య ప్రతినిధి సభ

కార్యాలయము నుల్తాన్ బజారు, హైదరాబాదు.

సంప్రదించుటకు ఫోన్ నెంబర్లు :

040-2475 6983, 66758707

అధిక ప్రతులు కొనుగోలుకై తగిన రేటుకు

“ఋజుంచును. 9849560691

పఠియి **ఆర్య ప్రతినిధి సభ** పఠాఢి

ఆ.ప్ర. తెలంగాణా కే నయే ప్రకాశన

ఆర్య సమాజమనగానేమి?

వైదిక ధర్మ, ఆర్యసమాజ और महर्षि दयानन्द का परिचय.

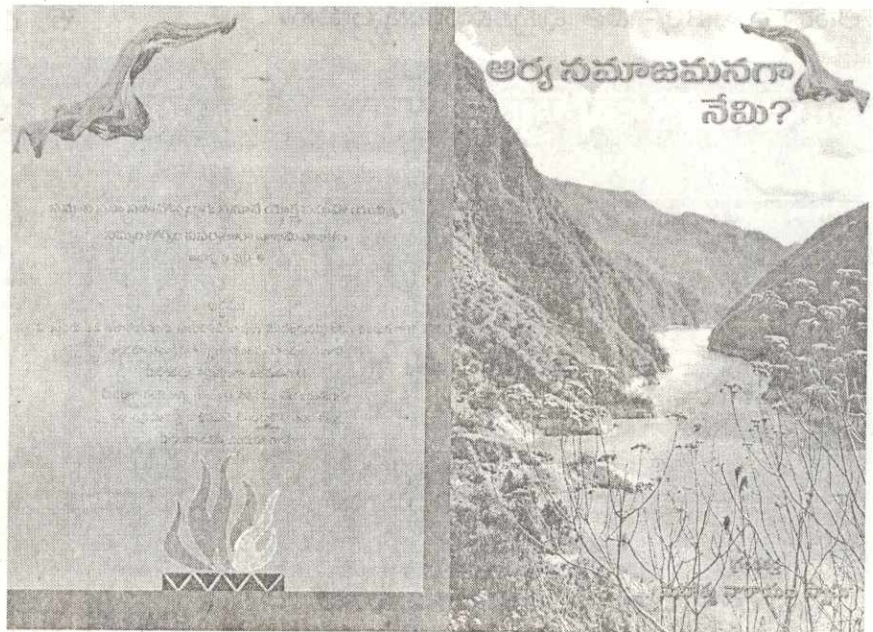
मूल हिन्दी रचना: महात्मा नारायण स्वामी कृत

आर्य समाज क्या है ?

का तेलुगु अनुवाद. अनुवादक श्री अनन्तार्य जी

मूल्य : रु. ३०/- प्रति पुस्तक

अधिक पुस्तकें खरीदने पर रु. २०/-प्रति पुस्तक



प्रचारार्थ आर्य समाज के अधिकारी एवं उत्साही कार्य कर्ता अधिकाधिक प्रतियों को खरीद कर घर-घर, पाठशाला, युवावर्ग एवं छात्रों में वितरित कर सहयोग दें।

प्राप्ति स्थान : कार्यालय आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र. - तेलंगाणा, सुल्तान बाजार - हैदराबाद

संपर्क सूत्र : फोन. नं. : ०४०-२४७५६९८३, ०४०- ६६७५८७०७, ०९८४९५६०६९९



विद्या वंतुल
महासभा वेदिका
(इंटलेक्चुअवल
फोरम) की वेदी
से बोलते हुए
स्वामी अग्निवेशजी।

समारोह में
उपस्थित जनता।



नरेंद्र भवन में
तेलंगाना संयुक्त
कार्यसमिति अध्यक्ष
प्रो. कोदंडरामजी,
स्वामीजी के साथ
भोजन करते हुए



हैदराबाद स्थित पं. नरेंद्र भवन, आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं के साथ प्रो.
कोदंडरामजी से मिलकर बातचीत करते हुए स्वामी अग्निवेशजी।

ఆర్య జీవన్

-హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆఫ్స్-తెలంగాణ, D.No. 4-2-15
 మహల్ దయానంద మార్గము సుల్తాన్ బజార్, హైదరాబాద్-95,
 phone No. 040 - 24753827, 66758707, FaX: 040-24557946
 సంపాదకులు - విరల్ రావు ఆర్య ప్రధాన్ సభ

स्वामी अग्निवेशजी हैदराबाद के विद्वान सामाजिक कार्यकर्ताओं द्वारा आयोजित विद्वत व सामाजिक कार्य महासभा को संबोधित करते हुए। साथ में तेलंगाना संयुक्त कार्य समिति के अध्यक्ष प्रो. कोदंडरामजी, उच्चतम न्यायालय के निवर्तमान न्यायाधीश जस्टिस सुदर्शन रेड्डीजी, श्री मल्लेपल्ली लक्ष्मय्याजी सभा अध्यक्ष, श्री चुक्क रामय्याजी (एमएलसी), प्रो. केशवराव जाधवजी व अन्यो के साथ।



पं. नरेंद्र भवन, हैदराबाद में आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं के साथ प्रो. कोदंडरामजी से मिलकर बातचीत करते हुए स्वामी अग्निवेशजी।

